नौ दो ग्यारह

किमत १५ पैसे

कथासार

मदन एक मोटी के मकान में दो तिन हिने से बगैर किराया दिये रह रहा है वह उसका सामान उठाके बाहर फेकती है।

मोटी फेंक दो एक एक चीज फेंक दो तिन महीन हो गए किराया दिये, पैसा कहांसे आएगा दुसरे महीने पैसा आया और चोरी हो गया, अब कहता है नानी मर गई ! देगा कहांसे दो सौ खर्च, सौ रुपये तनख्वाह उपर से डिंग मारता है मेरे चाचा बंबईमें लखपति है, चाहे तो सारी दिल्ली खरीद लेगा बेशर्म, बेहया आइन्दा किरायदार लाओ तो जोडा हो या साधु धर्मात्मा घर से आने जाने का पता तो रहेगा ये लफंगा तो न जाने कब आता है कब गायब हो जाता है सत्यानासी (बोर्ड हटाकर) श्री मदन-गोपाल मदन मालिक का बच्चा, यह घरभी गया, दोस्त आ आ मेरे ईदके चांद श्री मदन गोपाल मरे घर के बाहर ताला किसने लगाया, दोस्त जवाब नहीं तुम्हारा तिन महीने का किराया नही दिया और दो महीने से गायब है मालिक मकान ताला नहीं लगायगा ॥

आगे परदेपर देखिए

नवकेतन फिल्मस

डायरेक्टर-विजय आनंद म्यु.-एस. डी. बर्मन

कलाकार-कल्पना कार्तिक, देवआनंद, शशिकला, हेलन, इ.

नौ दो ग्यारह के गाने

किशोरकुमार— —१—

हम है राही प्यार के हमसे कुछ न बोलिये
जो भी प्यार से मिला हम उसी के होलिए
दर्द भी हमें कबुल चैन भी हमें कबुल
हम ने हर तरह के फुल हार में पिरो लिए
हम है राही प्यार के.....
धुप थी नसीब में धुप ने लिया है दम
चांदनी मिली तो हम चांदनी में सो गये
हम है राही.....
दिलका आसरा लिए हम तो बस युं ही जिये
एक कदम पर हंस लिए
एक कदम पर रो लिये
हम है राही.....—
राह में पडे है हम कबसे आपकी कसम
देखिये तो कम से कम बोलिये न बोलिये
हम है राही प्यार के.....

रफी, आशा— ३

कलीं के रूप में चली है धुप में कहां
सुनो जी मेहरबान हो गए न तुम जहां वहां
काहे को हो जलते के हम तोहे चलते अपने
दिल के सहारे.....
अब न रूक ये तो दुखने लगेगे
पांव नाजुक तुम्हारे
छोड दिवाना पन अजी जनाब मन कहां
चल न सकेंगे सभल न सकेंगे हम
तुम्हारी बलासे
मिलेगा सहारा तो आवोगी दो बारह
खिचके मेरी सदा पर राहों में होके गुम
जाओगे छुप के तुम कहां
मानोगे न तुम भी तो ये चले हमभी
अब हमें न बुलाना
जाते हो तो जाओ अदाएं न दिखाओ
दिल न होगा निशाना.....
हवापे बैठके चले हो ऐंठ के कहां कलीके रुपमें

किशोर, आशा— ३

आंचल में क्या जी ?
रुपहला बादल ?

बादल में क्या जी ?
किसी का आंचल ? आंचल में क्या ?
अजब सी हलचल ?
रंगिन है मौसम तेरे दम की बहार है
फिर भी है कुछ कम बस तेरा इन्तजार है
देखने में भोले हो पर हो बडे चंचल
झुकती है पलके झुकने दो और झुम के
उडने दो जुल्फें उडने दो होंठ चुमके
देखने में भोले हो.....
झुमें लहराए नैना मिल जाए नैन से
साथी बन जाए रास्ता कट जाए चैनसे
देखने में भोले.....

—४—

—रफी, आशा भोसले

आजा पंछी अकेला है
सो जा निंदिया की बेला है
उड गई निंदिया मेरे नैन से
बस करो युं ही पडे रहो चैन से
लागेरे डर मोहे लागेर
ये क्या डरने की बेला है

कितनी हंसी है ये फिजा
कितनी सुहानी है ये हवा
मर गए हम निकला दम-मरगए हम
मौसम क्या अलबेला है
बिन तेरे कैसी ये अंधेरी रात है
दिल में धडकने मेरे तेरे साथ है
तनहा है फिर भी दिल तनहा है
लागा सपनो का मेल है, आजा पंछी.....

गीता दत्त, आशा भोसले— ५

क्या हो जो दिन फिर रंगिला हो
रेत चमके समुन्दर निला हो
और आकाश गीला गीला हो
फिर तो बडा मजा होगा अम्बर झुका २ होगा
सागर रुका रूका होगा, तूफान छुपा छुपा होगा
क्या हो जो दिन
जो घिर चंचल घटाएं हो होटो पे मचलती बातें हो
सावन भरी बरसाते हो, फिर तो
कोई कोई फिसल रहा होगा
कोई कोई संभल रहा होगा
कोई कोई मचल रहा होगा, क्या हो जो
क्या हो फिर जो दुनियां सोती हो

और तारों भरी खामोशी हो
हर आहट पर धडकन होती हो, फिर तो बडा
दिल से दिल मिला होगा
तन मन खिला खिला होगा
दुश्मन जला जला होगा फिर तो बडा मजा

आशा भोसले— —६—

ढल की जाए चुनरिय हमारी हो राम
पी से मिलके बहकने के दिन आए हो
जैसे ठंडी पवन बन प्यार आ गई
जैसे चुपके से बन में बहार आ गई
फुल बनके महकने के दिन आए हो पी से मिलने
मे सपनो की बगियो में डोलूंगीरे
बन के कोयलियां बन में बोलूंगीरे
डाली २ चहकने के दिन आए हो ढल की जाए...

आशा भोसले— —७—

जाने जिगर हाए देखो तो इधर हाए हाए
नजरे तो लाखों हैं मगर तेरी नजर हाए हाए
झुकी है बहार घटाओ के तले
जबां है खुमार कहां उठ के चले
देखो तो मेरा दिल है दिल ये हाए हाए
न ले दिलकी आह तेरा होगा भला

मिलाले निगाहें चार दिल ना मिला
नजरे मिला जादु चला जादुगर हाय हाय
नजरे मिलाके उमंगो पे आए
आए थे हुजुर बडी आस लगाए
मिलके जरा देख भी लोजी इधर हाय हाय
जाने जिगर हाय.. .....

८-गीतादत्त-सीले जुबां एसा न हो सबकुछ खोना पडे
नादां सीले जुबां
आहो को छुपाये जा होठो को दबाए जा
युं ही मुस्काए जा गम लिये
जुबां सिए तू जुबां सिये सी ले जुबां
नादां क्युं है बेकरार करते जाना इन्तजार
आही जायेगी बहार तेरे लिये
युं ही जिये जा तू यु ही जिए सीले जुबां
सुनो सुनो जाने जहां समझो गीतों की
जंजीरो का समां है तेरे लिए
हाये नजर किये जा तू नजर किए सी ले जुबां

प्रकाशक-एफ. बी. बुरहानपुरवाला, सेंट्रल प्रकाशन,
सिप्लेक्स बिल्डिंग. पाववाला स्ट्रीट बंबई-४
मुद्रक—एस. के. खरगोनवाला
बाकीर प्रिंटिंग प्रेस, मुझफराबाद हॉल, ग्रांट रोड, बंबई ७